हिंदी (ऑनर्स) /सेमेस्टर - 5

हिंदी भाषा का व्यावहारिक व्याकरण

विराम-चिह्न

विराम-चिह्न

विराम का अर्थ है- 'रुकना' या 'ठहरना’

वाक्य को लिखते अथवा बोलते समय बीच में कहीं थोड़ा-बहुत रुकना पड़ता है जिससे भाषा स्पष्ट, अर्थवान एवं भावपूर्ण हो जाती है। लिखित भाषा में इस ठहराव को दिखाने के लिए कुछ विशेष प्रकार के चिह्नों का प्रयोग करते हैं। इन्हें ही विराम चिह्न कहा जाता है।

विराम शब्द वि + रम् + घं प्रत्यय से बना है और इसका मूल अर्थ है "ठहराव", "आराम" आदि के लिए। जिन सर्वसंमत चिन्हों द्वारा, अर्थ की स्पष्टता के लिए वाक्य को भिन्न भिन्न भागों में बाँटते हैं, व्याकरण या रचनाशास्त्र में उन्हें "विराम" कहते हैं।

प्राय: लोग समझते हैं कि "विराम" शब्द का इस अर्थ में प्रयोग आधुनिक है और यह शब्द पंक्चुएशन" का अनुवाद है। किंतु तत्वत: ऐसी बात नहीं है। पाणिनि से भी बहुत पूर्व प्रातिशाख्यों एवं शिक्षाग्रंथों में विराम शब्द का प्रयोग इससे मिलते जुलते अर्थों में मिलता है। तैत्तरीय प्रातिशाख्य में चार प्रकार का विराम माना गया है :

ऋग्विराम: पदविरामो विवृति विराम: समानपदविवृत्तिविरामस्त्रिमात्रो द्विमात्र एक मात्रोर्धमात्र इत्यानुपूर्व्येण,

अर्थात् ऋग्विराम, पदविराम, विवृतिविराम, समानपदविवृत्तिविराम, इन विरामों की मात्राएँ क्रमश: तीन, दो, एक तथा अर्ध मानी गई हैं। इनमें ऋग्विराम चरण या छंद के अंत के लिए अर्थात् आज के पूर्ण विराम जैसा है। "ऋक्" का अर्थ है छंद, इसीलिए इस विराम को "ऋग्विराम" कहा गया है। इसके लिए प्राय: एक या दो खड़ी पाई देने की परंपरा रही है।

पाणिनि में भी "विराम" शब्द (विरामोऽवसानम् 1.4, 110) आता है। यहाँ भी विराम का अर्थ लगभग वही है अर्थात् "मौन" या ध्वनि का अभाव। काशिकाकार कहता है "विरतिर्विरामः" विरम्यते अनेन इति वा विरामः।

काशिकाकार ने उपर्युक्त विरामों से आगे बढ़कर भी विचार किया है। उनका कहना है कि शब्द की हर दो ध्वनियों के बीच थोड़ा सा विराम होता है अर्थात् हर दो व्यंजनों या स्वरव्यंजन के बीच। इसे वे आधी मात्रा के बराबर मानते हैं। आधी मात्रा आज की दृष्टि से उदासीन स्वर या ह्रस्वार्ध स्वर के बराबर मानी जा सकती है।

भारत में लेखन के विरामचिह्नों का प्रयोग काफी प्राचीन काल से मिलता है। अशोक के अभिलेखों में - "," तथा "।" प्रयोग हुआ है। इसी प्रकार पूर्व प्रदेशीय चालुक्य अभिलेखों में "।" का प्रयोग मिलता है। भारत में विरामचिह्नों का व्यवस्थित एवं नियमित प्रयोग यूरोपीय संपर्क के बाद प्रेस के प्रचार के साथ बढ़ा।

हिंदी में **खड़ी पाई** या पूर्ण विराम भारतीय परंपरा का है, जिसका प्राचीन नाम "दंड" था। शेष चिन्ह अंग्रेजी के माध्यम से यूरोप से आए हैं। अधिकांश विरामचिह्न (. :, ;) मूलत: बिंदु पर आधारित हैं।

पाठक के भाव-बोध को सरल और सुबोध बनाने के लिए विरामचिन्हों का प्रयोग होता है। सारांश यह कि वाक्य के सुन्दर गठन और भावाभिव्यक्ति की स्पष्टता के लिए इन विरामचिह्नों की आवश्यकता और उपयोगिता मानी गयी है।

हिंदी में प्रचलित प्रमुख विराम चिह्न निम्नलिखित है -

(1)	अल्प विराम (Comma)	(,)
(2)	अर्द्ध विराम (Semi colon)	(;)
(3)	पूर्ण विराम(Full-Stop)	(।)
(4)	उप विराम (Colon)	[:]
(5)	विस्मयादिबोधक चिह्न (Sign of Interjection)	(!)
(6)	प्रश्नवाचक चिह्न (Question mark)	(?)
(7)	कोष्ठक (Bracket)	(())
(8)	योजक चिह्न (Hyphen)	(-)
(9)	अवतरण चिह्न या उद्धरणचिह्न (Inverted Comma)	("... ")
(10)	लाघव चिह्न (Abbreviation sign)	(o)
(11)	आदेश चिह्न (Sign of following)	(:-)
(12)	रेखांकन चिह्न (Underline)	(_)
(13)	लोप चिह्न (Mark of Omission)	(...)

विराम चिह्न के प्रकार

अल्प विराम (Comma) [,]

जहाँ थोड़ी सी देर रुकना पड़े, वहाँ अल्प विराम चिन्ह का प्रयोग करते हैं ।
उदाहरण : नदी, पहाड़, खेत, हवा
उदाहरण : राम, सीता और लक्ष्मण जंगल गए ।

अर्द्ध विराम (Semicolon) [;]

जहाँ अल्प विराम की अपेक्षा कुछ अधिक देर तक रुकना पड़े, वहाँ अर्द्ध विराम का प्रयोग करते है ।
उदाहरण : सूर्योदय हो गया; चिड़िया चहकने लगी और कमल खिल गए ।

उप विराम (Colon) [:]

जब किसी कथन को अलग दिखाना हो तो वहाँ पर उप विराम का प्रयोग करते हैं ।
उदाहरण : प्रदूषण : एक अभिशाप ।
उदाहरण : विज्ञान : वरदान या अभिशाप ।

पूर्ण विराम (Full Stop) [।]

वाक्य के समाप्त होने पर पूर्ण विराम चिन्ह का प्रयोग करते हैं ।
उदाहरण : पेड़ से हमें फल प्राप्त होते हैं ।

प्रश्न वाचक चिन्ह (Question Mark) [?]

प्रश्न वाचक चिन्ह का प्रयोग प्रश्नवाचक वाक्यों के अंत में किया जाता है ।
उदाहरण : ताजमहल किसने बनवाया ?

विस्मयबोधक चिन्ह (Exclamation Mark) [!]

यह विस्मयादिबोधक चिन्ह अव्यय शब्द के आगे लगाया जाता है ।
उदाहरण : हाय !, आह !, छि !, अरे !, शाबाश !
उदाहरण : आह ! कितना सुहावना मौसम है ।

निर्देशक चिन्ह (Dash) [—]

निर्देशक चिन्ह का प्रयोग विषय, विवाद, सम्बन्धी, प्रत्येक शीर्षक के आगे, उदाहरण के पश्चात, कथोपकथन के नाम के आगे किया जाता है । इसको रेखा चिन्ह के नाम से भी जाना जाता है ।
उदाहरण : अध्यापक — तुम जा सकते हो ।

कोष्ठक चिन्ह (Bracket) [(),{},[]]

कोष्ठक चिन्ह का प्रयोग अर्थ को और अधिक स्पस्ट करने के लिए शब्द अथवा वाक्यांश को कोष्ठक के अन्दर लिखकर किया जाता है ।
उदाहरण : धर्मराज (युधिष्ठिर) सत्य और धर्म के संरक्षक थे ।

उद्धरण या अवतरण चिन्ह (Inverted Commas) [" "]

किसी कथन को ज्यों का त्यों उद्धृत करने के लिए उद्धरण या अवतरण चिन्ह का प्रयोग करते हैं ।
उदाहरण : महा कवि तुलसीदास ने सत्य कहा है — "पराधीन सपनेहु सुख नाहीं" ।
उदाहरण : भारतेंदु जी ने कहा, "हिंदी, हिन्दू, हिंदुस्तान" ।

योजक चिन्ह (Hyphen) [-]

योजक चिन्ह का प्रयोग समस्त पदों के मध्य में किया जाता है ।
उदाहरण : सुख-दुःख, लाभ-हानि, दिन-रात, यश-अपयश, तन-मन-धन ।

लाघव चिन्ह (Sign of Abbreviation) [०]

किसी बड़े शब्द को संक्षेप में लिखने के लिए कुछ अंश लिखकर लाघव चिन्ह लगा दिया जाता है । इसको संक्षेपण चिन्ह भी कहते हैं ।
उदाहरण : डॉक्टर के लिए — डॉ० ।
उदाहरण : इंजिनियर के लिए — इंजी० ।

विवरण चिन्ह (Sign of Following) [:-]

विवरण चिन्ह का प्रयोग वाक्यांश के विषयों में कुछ सूचक निर्देश आदि देने के लिए किया जाता है ।
उदाहरण : वनों नाम हैं :-

विस्मरण चिन्ह या त्रुटिपूरक चिन्ह [^]

विस्मरण चिन्ह (Vismaran Chinh) का प्रयोग लिखते समय किसी शब्द को भूल जाने पर किया जाता है ।
उदाहरण : मैं पिताजी के साथ ^ गया ।
उदाहरण : हमें रोजाना अपना कार्य ^ चाहिए ।

पद्लोप चिन्ह (Mark of Ellipsis) [...]

उदाहरण : श्याम ने मोहन को गली दी ... ।
उदाहरण : मैं सामान उठा दूंगा पर ... ।

यदि विराम-चिह्न का प्रयोग न किया जाए तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

जैसे- (1)रोको मत जाने दो।
(2)रोको, मत जाने दो।
(3)रोको मत, जाने दो।

धन्यवाद

प्रस्तुति – डॉ. मानवेश नाथ दास
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
राम लाल आनंद कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय